International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2016, Submitted in July 2016, iajesm2014@gmail.com

''तकनीकी महाविद्यालय एवं शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों में व्यावसायिक संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन''

नेकराम, शोद्यार्थी शिक्षा, टांट्या विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ हरीश कंसल, प्राचार्य, विनायक महाविद्यालय, श्री विजयनगर, श्री गंगानगर
Email : nekramangel@gmail.com, svcollege.88@gmail.com

सारांश :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''तकनीकी महाविद्यालय एवं शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों में व्यावसायिक संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन'' करना है। इस शोध अध्ययन में व्यवसाय संघर्ष मापनी (डॉ. अनीत कुमार एवं रेखा द्वारा निर्मित) का उपयोग किया गया है। परिणामों की गणना करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

तकनीकी शब्द – संघर्ष, व्यवसाय एवं व्यावसायिक संघर्ष।

प्रस्तावना :–

आज के समय में पहले की तुलना में विकल्पों की कमी नहीं है। आज इंजीनियरिंग, मैडिकल, लॉ, टीचिंग जैसे परंपरागत विषयों के साथ–साथ सैकड़ों नए विकल्प भी सामने आ गए हैं। ऐसे में एक या दो विषय में ही उच्च शिक्षा हासिल करने की मजबूरी नहीं रह गई है। आज के छात्रों को कक्षा बारहवीं के बाद ही तय करना होता है कि वे प्रोफेशनल कोर्स करना चाहते हैं या फिर एकेडमिक कोर्स।

व्यावसायिक संघर्ष :–

व्यावसायिक योग्यता वर्तमान में रोजगार प्राप्त करने का एक सुअवसर प्रदान करती है। व्यक्ति केवल स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षण ग्रहण करके आज के युग में उन्नति नहीं कर सकता अपने जीवन यापन के लिए उसे कोई न कोई रोजगार भी अपनाना पड़ता है और व्यावसायिक योग्यता द्वारा किशोरों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं।

व्यावसायिक संघर्ष के ऐसे चौराहे पर अधिकांश छात्र यह तय नहीं कर पाते कि वे क्या पढ़ें और क्या न पढ़ें। इस दुविधा से निकलने का कोई उपाय उन्हें नहीं सूझता। सही मार्गदर्शन न मिलने के कारण अधिकांश छात्र अपने मित्रों की देखा–देखी ही कोर्स चुन लेते हैं या फिर अपने अभिभावक की इच्छा से मैडिकल या इंजीनियरिंग की राह पर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। दूसरों की देखा–देखी या फिर अभिभावक के दबाव से किसी भी कोर्स का चुनाव हर विद्यार्थी के लिए सही नहीं माना जा सकता, क्योंकि ऐसी स्थिति में आगे चलकर छात्र के प्रदर्शन के साथ–साथ उसका कॅरियर भी प्रभावित हो सकता है।

अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को इंजीनियरिंग या मैडिकल की पढ़ाई ही कराना चाहते हैं या फिर उच्च प्रशासनिक सेवा में भेजने के इच्छुक होते हैं। इस बात को समझे बिना कि वह इसमें सक्षम है या नहीं। इसके लिए अभिभावक अपने बच्चों की तुलना अन्य छात्रों से करते हैं। अभिभावकों की यह प्रवृत्ति उचित नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि अभिभावक अपने बच्चों पर अनावश्यक दबाव डालें।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :–

हमारी समस्या आज के समाज के लिए सशक्त आधार तैयार करती है तथा हमारा शोध विद्यार्थियों को आत्मविश्वास तथा समयानुकूल भविष्य की सोच के प्रति अग्रसर करता है। यदि छात्रों को सही आयु में अपने व्यवसाय के प्रति सोच का विकास होता है, तब वह युवावस्था तक आते–आते एक सफल व्यवसायी या नौकरीपेशा व्यक्ति बन सकता है, जो कि देश तथा समाज के विकास का आधार है।

अच्छे रोजगार, अच्छी नौकरी या व्यावसायिक निष्ठा, जानकारी एवं प्रतिबद्धता के लिए विद्यार्थी में आत्मविश्वास होना चाहिए तथा सोच समझकर सही निर्णय लेकर ही व्यवसाय का चुनाव करना चाहिए। विद्यार्थी को किसी क्षेत्र में असफल होने पर निराश न होकर अन्य क्षेत्र में रोजगार के लिए प्रयास करना चाहिए जिससे उसका जीवन बेरोजगारी से कुंठित न हो। सही दिशा व सही (उचित) मार्गदर्शन से विद्यार्थी अपने सही व्यवसाय का चुनाव करके जीवन में सफल हो सकता है तथा अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।

समस्या कथन :–

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्न प्रकार से है –

''तकनीकी महाविद्यालय एवं शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में व्यावसायिक संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन।''

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :–

शोधकर्त्ता ने अपने शोध में निम्नलिखित उद्देश्य सम्मिलित निर्धारित किए हैं –

1. तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यावसायिक संघर्ष का अध्ययन करना।
2. तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के व्यावसायिक संघर्ष का अध्ययन करना।
3. तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के व्यावसायिक संघर्ष का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ :–

शोधकर्त्ता ने अपने शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की हैं :–

1. तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यावसायिक संघर्ष में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के व्यावसायिक संघर्ष में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के व्यावसायिक संघर्ष में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को केवल हनुमानगढ़ जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन को स्नातक स्तर तक सीमित रखा गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन को 100 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन को तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के अन्तर्गत छात्र तथा छात्राओं का अध्ययन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त विधि :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

1. न्यादर्श के रूप में हनुमानगढ़ जिले के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
2. न्यादर्श के अन्तर्गत तकनीकी महाविद्यालय के 50 एवं शिक्षा महाविद्यालय के 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
3. न्यादर्श के अन्तर्गत तकनीकी महाविद्यालय के 25 छात्र एवं 25 छात्राओं का चयन किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के अन्तर्गत शिक्षा महाविद्यालय के 25 छात्र एवं 25 छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने तथ्यों के संकलन हेतु **व्यवसाय संघर्ष मापनी (डॉ. अनीत कुमार एवं रेखा द्वारा निर्मित)** का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त साँख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

तथ्यों का विश्लेषण :–

सारणी संख्या 1

तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यावसायिक संघर्ष के दत्तों को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	सांख्यिकी समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
1.	तकनीकी महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी	50	230.22	25.29	5.21	1.12	स्वीकृत
2.	शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी	50	236.06	26.78			

$df = N_1 + N_2 - 2 = 50 + 50 - 2 = 100 - 2 = 98$

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि तकनीकी महाविद्यालय व शिक्षा महाविद्यालय के विद्यार्थियों के व्यावसायिक संघर्ष से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 230.22 तथा 236.06 तथा मानक विचलन क्रमशः 25.29 तथा 26.78 प्राप्त हुआ है, जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात 1.12 प्राप्त हुआ है, जो कि स्वतन्त्रता की कोटि 98 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.98 तथा 0.01 के मान 2.62 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि तकनीकी महाविद्यालय एवं शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 2

तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के व्यावसायिक संघर्ष के दत्तों को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	सांख्यिकी समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
1.	तकनीकी महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र	25	224.68	23.23	7.14	0.78	स्वीकृत
2.	शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र	25	230.24	27.08			

$df = N_1 + N_2 - 2 = 25 + 25 - 2 = 50 - 2 = 48$

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि तकनीकी महाविद्यालय व शिक्षा महाविद्यालय के छात्रों के व्यावसायिक संघर्ष से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 224.68 तथा 230.24 तथा मानक विचलन क्रमशः 23.23 तथा 27.08 प्राप्त हुआ है, जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात 0.78 प्राप्त हुआ है, जो कि स्वतन्त्रता की कोटि 48 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.68 तथा 0.01 के मान 2.01 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि तकनीकी महाविद्यालय एवं शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 3

तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के व्यवसायिक संघर्ष के दत्तों को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	सांख्यिकी समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
1.	तकनीकी महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राएँ	25	235.76	23.01	6.82	0.89	स्वीकृत
2.	शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राएँ	25	241.88	25.16			

$df = N_1 + N_2 - 2 = 25 + 25 - 2 = 50 - 2 = 48$

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि तकनीकी महाविद्यालय व शिक्षा महाविद्यालय की छात्राओं के व्यावसायिक संघर्ष से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 235.76 तथा 241.88 तथा मानक विचलन क्रमशः 23.01 तथा 25.16 प्राप्त हुआ है, जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात 0.89 प्राप्त हुआ है, जो कि स्वतन्त्रता की कोटि 48 के आधार पर सारणी के स्तर 0.05 के मान 1.68 तथा 0.01 के मान 2.01 से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि तकनीकी महाविद्यालय एवं शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया तथा अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु संकलित दत्त विश्लेषण एवं निर्वचन की प्रक्रिया से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं :–

परिकल्पना 1 :–

''तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यावसायिक संघर्ष में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

उपरोक्त परिकल्पना के आधार पर प्राप्त परिणामों से निष्कर्ष निकलता है कि तकनीकी महाविद्यालय और शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों में व्यावसायिक संघर्ष के आधार पर समानता पाई जाती है अर्थात् दोनों प्रकार के महाविद्यालयों के व्यावसायिक संघर्ष में समानता पाई जाती है। इस आधार पर उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत है।

परिकल्पना 2 :–

''तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के व्यावसायिक संघर्ष में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

उपरोक्त परिकल्पना के आधार पर प्राप्त परिणामों से निष्कर्ष निकलता है कि तकनीकी महाविद्यालय और शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्रों के व्यावसायिक संघर्ष में समानता पाई जाती है। छात्रों को उचित व्यावसायिक मार्गदर्शन न मिलने से उनमें व्यावसायिक संघर्ष पाया जाता है। अतः इस आधार पर उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत है।

परिकल्पना 3 :–

''तकनीकी महाविद्यालयों एवं शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के व्यावसायिक संघर्ष में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

उपरोक्त परिकल्पना के आधार पर प्राप्त परिणामों से निष्कर्ष निकलता है कि तकनीकी महाविद्यालय और शिक्षा महाविद्यालय में अध्यनरत छात्राओं के व्यावसायिक संघर्ष में समानता पाई जाती है। छात्राओं को महाविद्यालय स्तर पर व्यवसाय चयन के लिये पारिवारिक व शैक्षिक निर्देशन व मार्गदर्शन न प्राप्त होने के कारण उनमें व्यावसायिक संघर्ष पाया जाता है। अतः इस आधार पर उपरोक्त परिकल्पना स्वीकृत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, आर.सी. भट्ट (2005) : ''शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन, आगरा
2. पाण्डे, के.पी. (2007) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', दोआबा हाऊस प्रकाशन, नई दिल्ली
3. अस्थाना, विपिन (2003) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
4. कोल, लोकेश (2006) : ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'', विकास पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली
5. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2008) : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', आर.एल. बुक डिपो, मेरठ
6. सरीन, डॉ. शशिकला (2007) : ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2
7. माथुर, डॉ. एस.एस. (2010) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

– – – – – – – –